# मलाला

## पाकिस्तान की एक बहादुर लड़की

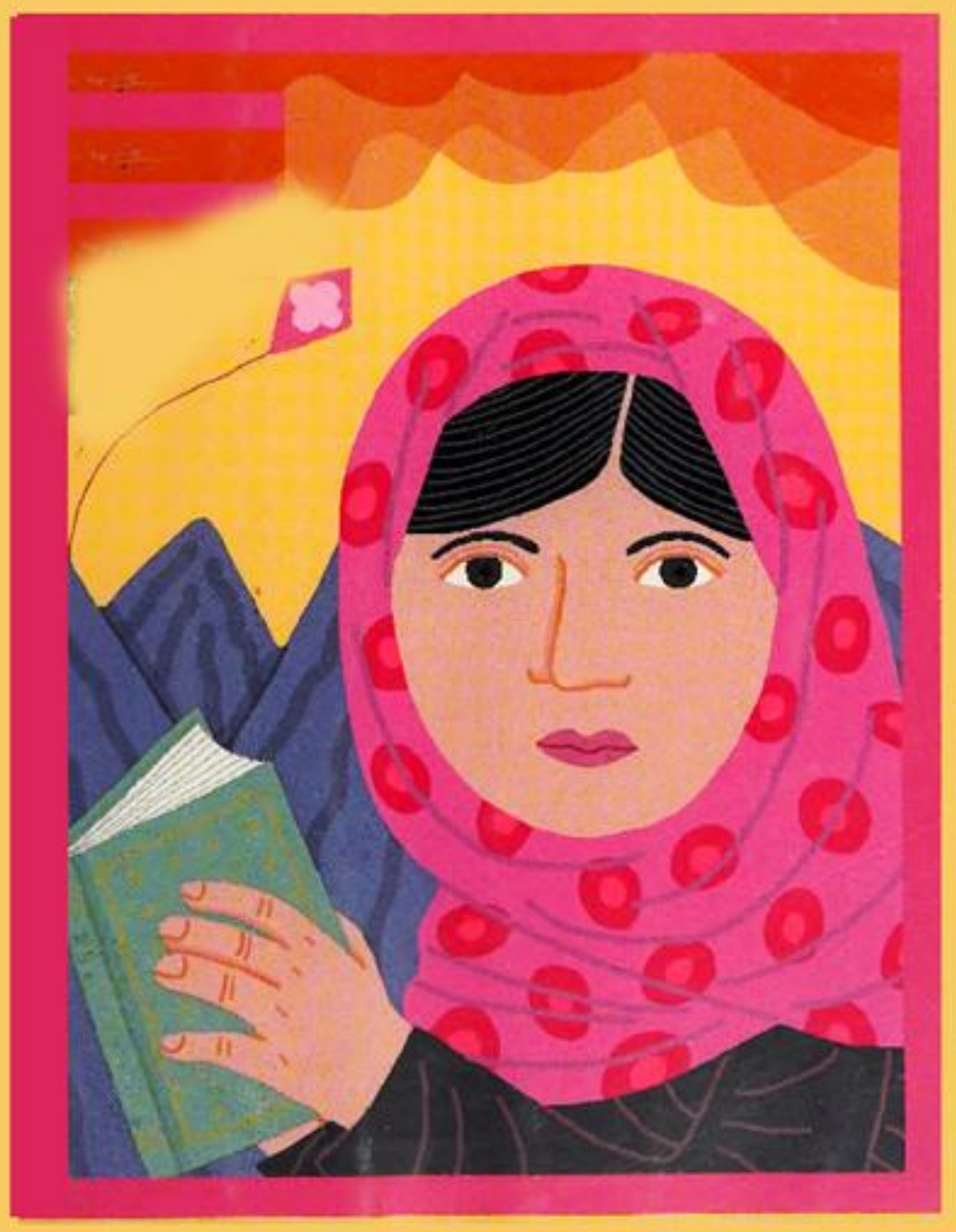

जीनत विंटर

# मलाला

## पाकिस्तान की एक बहादुर लड़की

जीनत विंटर

# मलाला यूसूफ़जई

मलाला का जन्म पाकिस्तान की स्वात घाटी के छोटे से शहर मिंगोरा में हुआ. वो वहां अपने माँ-पिता और दो भाईयों के साथ रहती थी. मलाला ने जल्दी ही स्कूल जाना शुरू कर किया क्योंकि उसके पिता वहां एक स्कूल चलाते थे. मलाला पढ़ाई में बहुत तेज़ थी.

जब धार्मिक चरमपंथियों के समूह तालिबान ने स्वात घाटी में सत्ता हासिल की तब उन्होंने लड़कियों को स्कूल जाने से रोका. मलाला ने अपने पिता से पूछा, "वे क्यों नहीं चाहते कि लड़कियां स्कूल जाएं?"

"वे कलम से डरते हैं?" उसके पिता ने जवाब दिया.

जब मलाला केवल ग्यारह वर्ष की थी, तब उसने पहली बार सार्वजनिक रूप से लड़कियों के लिए शिक्षा के महत्व के बारे में अपनी आवाज़ बुलंद की. जब तालिबान अधिक आक्रामक हुए, तब भी मलाला ने अपना बोलना जारी रखा. धमकियों का सिलसिला जारी रहा, पर फिर भी तालिबान मलाला को बोलने से नहीं रोक पाए. अंत में जब मलाला स्कूल वैन में जा रही थी तब एक तालिबानी फौजी ने मलाला पर गोली चलाई. गोली उसके सिर और गर्दन से होते हुए उसके कंधे में जाकर धंसी. मलाला का कई अस्पतालों में इलाज हुआ. अंत में इंग्लैंड में क्वीन एलिजाबेथ अस्पताल बर्मिंघम में वो ठीक हुई. अब मलाला वहीँ अपने परिवार के साथ रहती है.

मलाला को बहादुरी के लिए कई पुरस्कार मिले, जिसमें अंतर-राष्ट्रीय बाल शांति पुरस्कार (उपविजेता), पाकिस्तान राष्ट्रीय युवा शांति पुरस्कार, सामाजिक न्याय के लिए मदर टेरेसा मेमोरियल अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार और शांति और मानवता के लिए रोम पुरस्कार शामिल हैं. 2013 में उसे एक नोबेल शांति पुरस्कार मिला.

मलाला ने अन्याय के खिलाफ लगातार बोलना जारी रखा.

हम खतरों से बचने के लिए प्रार्थना न करें,
बल्कि उनका सामना करते समय निडर बने रहें.

रविंद्रनाथ टैगोर

"मलाला कौन है?" तालिबानी फौजी ने स्कूल वैन की तलाश करते हुए पूछा.

मलाला एक ऐसी लड़की है जो डरती नहीं है,

"मैं खुद को ज्ञान से सशक्त करूंगी," उसने कहा.

तालिबानी फौजियों ने स्वात घाटी में लड़कियों से कहा,

"स्कूल मत जाओ."

"पढ़ो मत," उन्होंने कहा.

पर लड़कियों ने उनकी बात नहीं सुनी.

वे बहादुर लड़कियां थीं.

स्कूल का कमरा छात्रों को सूरज की धूप और धमकी के खतरों से बचाता था.

लेकिन स्कूल से दूर, एक काला बादल हर जगह उनका पीछा कर रहा था.

हर दिन तालिबान अपनी धमकियों को प्रसारित करते थे.

"लड़कियों को स्कूल नहीं जाना चाहिए," वे कहते.

लेकिन मलाला एक बहादुर लड़की है जिसने उनकी खिलाफत की.

“मुझे शिक्षा का अधिकार है.

मुझे खेलने का अधिकार है.

मुझे गाने का अधिकार है.

मुझे बात करने का अधिकार है.

मुझे बाजार जाने का अधिकार है.

मुझे बोलने का अधिकार है.”

स्वात घाटी की बहादुर लड़कियों ने तालिबानी फौजियों को
चकमा देने के लिए स्कूल जाने के लिए यूनिफार्म की बजाए
घर के साधारण कपड़े पहने.

उन्होंने स्कूल की यूनिफार्म घर में ही रखी.

मलाला बार-बार बोली, उसने बार-बार अपनी आवाज़ उठाई.

"वे मुझे रोक नहीं सकते.

मैं ज़रूर शिक्षा प्राप्त करूंगी,

चाहें वो घर, स्कूल, या कहीं भी हो."

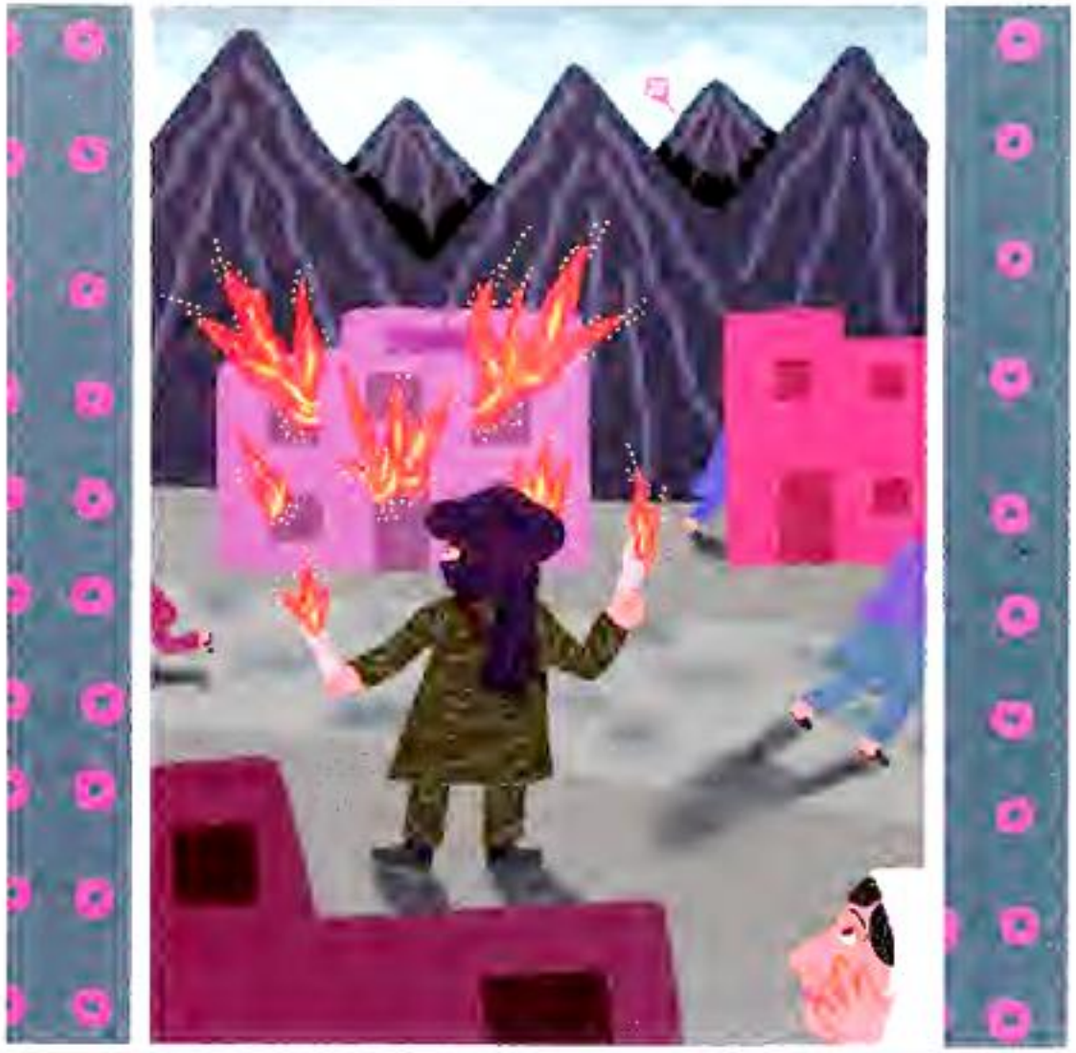

स्वात घाटी में बिल्कुल शांति नहीं है.

तालिबान स्कूल जलाते हैं और बमबारी करते हैं.

फिर भी मलाला बोली.

“उग्रवादी, किताबों और पेन से डरते हैं.

वे महिलाओं से डरते हैं.

तालिबान ने शिक्षा के मेरे मूल अधिकार को छीनने की हिम्मत कैसे की?”

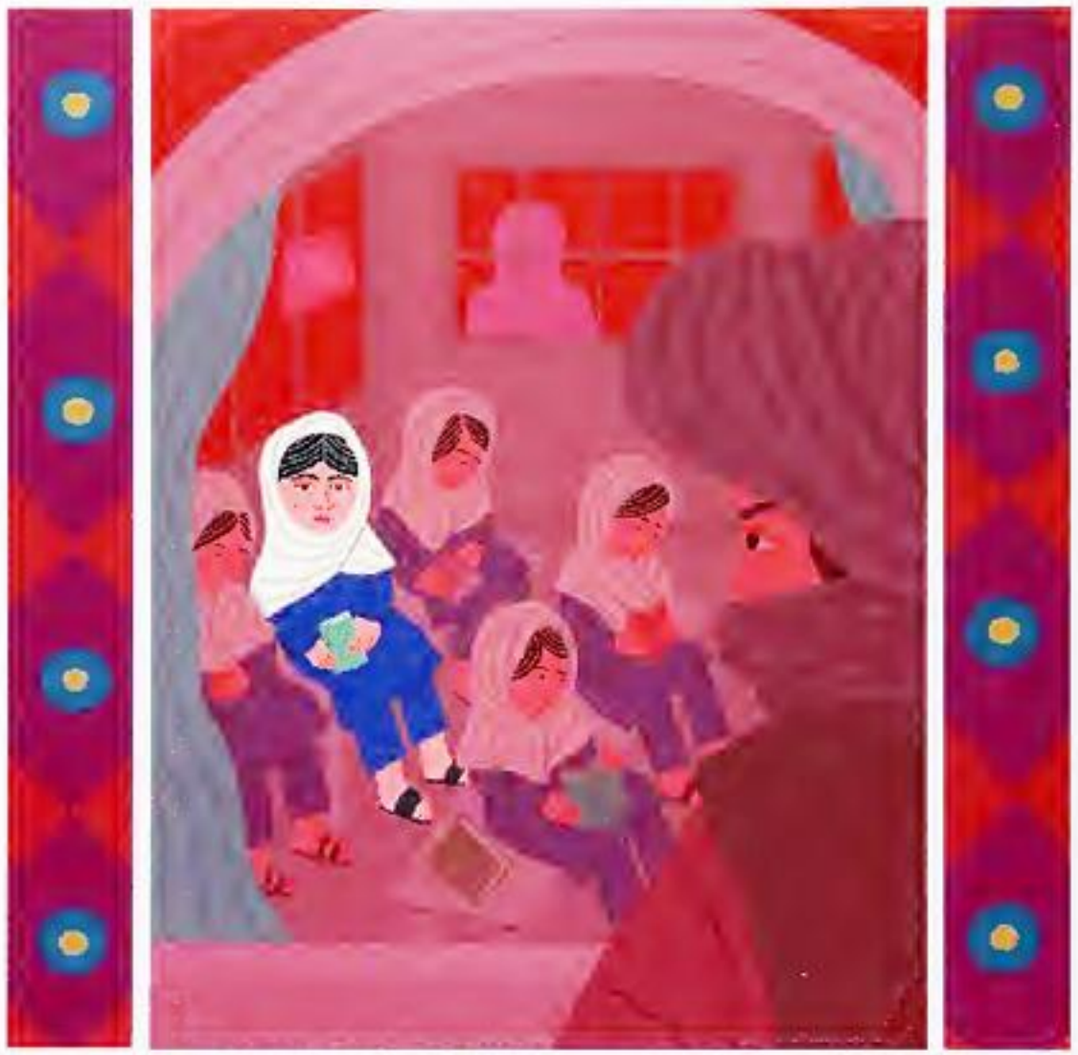

अब स्कूल जाना बहुत खतरनाक हो गया है. सुरक्षा के लिए लड़कियां स्कूल वैन का ही इस्तेमाल करती हैं. फिर एक दिन एक तालिबानी फौजी ने स्कूल की वैन को रोका. उसने अंदर झांक कर देखा, और पूछा :

“मलाला कौन है?

जल्दी बताओ, नहीं तो मैं तुम सबको गोली मार दूंगा.”

फिर उसने मलाला पर गोली चलाई.

वैन, मलाला को स्वात घाटी के छोटे अस्पताल में ले गई.

एक हेलीकॉप्टर उसे दूर के बड़े अस्पताल में ले गया. फिर एक जेट विमान ने समुद्र में उड़ान भरकर, उसे उससे भी बड़े एक अस्पताल में पहुँचाया.

हर अस्पताल में डॉक्टरों ने मलाला को बचाने की कोशिश की.

मलाला पर चली गोली की आवाज़ पूरी दुनिया में गूंजी. सभी जगह लड़के-लड़कियों, महिलायों-पुरुषों ने, मलाला के ठीक होने के लिए प्रार्थना की.

धीरे-धीरे मलाला अपनी बेहोशी से जागी. उसने अपनी आँखें खोलीं फिर हाथ में एक किताब पकड़कर मुस्कुराई.

फिर उसकी आवाज भी लौट आई.

अपन 16वें जन्मदिन पर मलाला, विश्व नेताओं के सामने फिर से बोली, पहले की तुलना में और अधिक मजबूती से.

"उन्होंने सोचा कि गोलियां हमें चुप करा देंगी, लेकिन वे उसमें फेल हुए."

एक छात्र, एक टीचर, एक किताब, एक कलम, दुनिया को  बदल सकती है."

फिर पूरी दुनिया ने पाकिस्तान की इस बहादुर लड़की की आवाज सुनी.